Date - 29/04/2021
Name - Ramu Prasad (Assistant Prof.)
College - T.N.A.T.T.C. Harigaon Ara
Sub - Pedagogy of Biological Science (7a)
Class - B.Ed. (1st year)

समस्या - समाधान विधि
Problem Solving Method

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में समस्या-समाधान विधि का विशेष महत्व है। इसमें शिक्षक किसी समस्या को समाधान हेतु छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करता है। छात्र उसके समाधान हेतु नियोजित प्रयास करते हैं और अर्थपूर्ण हल खोजते है। इस प्रकार समस्या-समाधान विधि एक विवेचनात्मक चिन्तन प्रक्रिया से विवेकपूर्ण समाधान खोजने की विधि है।

शिक्षा शब्दकोश में समस्या-समाधान विधि के अर्थ को इस प्रकार स्पष्ट किया गया है, -
" समस्या - समाधान विधि जो समस्यात्मक है, के व्यवहार का एक ढंग है, समस्या की एक स्पष्ट परिभाषा, परिकल्पनात्मक समाधान की उचित तैयारी, परिकल्पनाओं के सोद्देश्य परीक्षण, जब तक साक्ष्य उसके प्रतिग्रहण को समाश्वासन देता है, को सम्मिलित करने की विधि है।"

PAGE NO. :
DATE : / /

समस्या - समाधान की प्रक्रिया (Process of the Problem Solving)

इसमें सर्वप्रथम छात्र और शिक्षक मिलकर किसी समस्या को सुनिश्चित कर लेते हैं। फिर समस्या के सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक पक्ष पर विवेचन करते हैं। समस्या को केन्द्रित करने के लिए उसके उद्देश्यों को निर्धारित किया जाता है। तत्पश्चात् समस्या के समाधान के लिए परिकल्पनाएँ निर्मित करते हैं, जो समस्या के सम्भावित समाधान की ओर संकेत करती हैं। इसके उपरान्त परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु प्रयोग किये जाते हैं। प्रयोगों से प्राप्त आकड़ों की व्याख्या उपयुक्त तकनीक द्वारा करके निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया जाता है। यही निष्कर्ष समस्या के समाधान होते हैं।

समस्या समाधान विधि के लाभ :

इस विधि के निम्नलिखित लाभ हैं -

1) यह विधि उच्च कक्षाओं के लिए विशेष उपयोगी है।
2) इस विधि में छात्र तार्किक क्रम से ज्ञान प्राप्त करते हैं। इससे उनका प्राप्त ज्ञान सुव्यवस्थित होता है और स्थायी होता है।
3) इस विधि से छात्रों को स्व-अध्ययन हेतु प्रेरणा मिलती है।
4) इससे छात्रों की मानसिक शक्तियों का विकास होता है।

PAGE NO. :
DATE : / /

समस्या - समाधान विधि की सीमाएँ :-

(Limitations of Problem Solving Method)

इस विधि की निम्नलिखित सीमाएँ हैं :-

1.) यह विधि निम्न स्तर के बालों के लिए उपयोगी नहीं है क्योंकि इस स्तर के बालों का मानसिक विकास इतना नहीं हो पाता कि वे किसी समस्या के समाधान के लिए प्रयोग कर सकें।

2) इस विधि की प्रक्रिया जटिल है। इसलिए इस विधि से अध्यापन में बालक रुचि लेते हैं।

3) इस विधि से शिक्षण करते हुए निर्धारित पाठ्यक्रम को पूर्ण कर पाना सम्भव नहीं है।

4) इस विधि के प्रयोग में सभी शिक्षक दक्ष नहीं होते हैं।

5) उपकरणों के अभाव में इस विधि की सफलता संदिग्ध रहती है।